



SMT. INDIRA P.P. BORA

Smt. Indira P.P. Bora is an internationally renowned Indian classical dance exponent specializing in Bharata Natyam, Kuchipudi and Sattriya dance. She has extensively performed in India and abroad.

2. Born on 10th June, 1947, Smt. Bora received Post-Graduate Diploma with Distinction in Bharata Natyam after training for more than 13 years under direct supervision of legendary dancer Rukmini Devi Arundale at Kalakshetra in Chennai and learnt Kuchipudi from late Guru Vempatti Chinna Satyam at Kuchipudi Art Academy in Chennai. She is an empaneled Sattriya dance artist of ICCR (1992), a Member of the Expert Committee of Performing Arts (for grants) of Ministry of Culture, Government of India and a top grade dance artist of Doordarshan. As one of the first female pioneers, she has revived and developed Sattriya traditional dance form of monasteries into a recognised Indian classical dance form and given exposures nationally and internationally over the last 4 decades. She performed and toured internationally with Kalakshetra dance dramas in the late 1960s and 1970s and was one of the first female pioneers to introduce Sattriya dance to the Western world. She is a member of Expert ODA Committee of Ministry of External Affairs, Government of India.

3. Long before Sattriya was officially recognised as a 'classical dance' by Sangeet Natak Akademi in 2000, Smt. Bora along with traditional gurus, eminent dance scholar and critic Dr. Sunil Kothari and her daughter Dr. Menaka P.P. Bora jointly promoted Sattriya as a 'neo-classical' dance form through series of lecture-performances at key national dance centres and festivals in the metropolitan cities of India in the 1980s and 1990s. This joint contribution helped to create a strong awareness of Sattriya dance as a 'classical form' among the arts administrators, dancers, scholars, critics and gurus in the classical dance world. This series of national exposure was widely featured in national and regional media and in clue course of time helped to create Sattriya consciousness among the dance loving mass audiences.

4. Smt. Bora promoted Indian classical Sattriya dance as 'world dance' at a number of international platforms such as The Edinburgh Festival Fringe 2011 at Dance Base Centre, National Centre for Dance in Edinburgh, Scotland; Sattriya Dance Series: UK 2007, an exclusive Sattriya dance tour in 5 major cities and dance venues in the UK (2007): Alexander Theatre and MAC Theatre in Birmingham, The Lowry in Manchester, Roehampton University in London, Arts in Education Centre in Leicester and World Museum in Liverpool; tour at Asia Pacific Arts Network in Seoul, South Korea (2007); ICCR sponsored Sattriya dance tour at World Hue Festival and Hanoi Opera House in Vietnam (2004); dance tour in the USA (2000): World Bank Auditorium in Washington DC, Berkeley Arts Festival in California, Battery Dance Company in NYC, University of California Los Angeles, Indian Embassy in Houston etc.

5. Smt. Bora has also performed Sattriya dance and Bharata Natyam in major national dance festivals/venues in India like Khajuraho Dance Festival, India Habitat Centre, India International Centre, Siri Fort Auditorium of Delhi, National Centre for Performing Arts of Mumbai, Kalakshetra Arts Festival, Music Academy, Krishna Gana Sabha, Narada Gana Sabha of Chennai, Kala Mandir, Birla Sabhaghar of Kolkata, Darpana Academy of Ahmedabad. She is the Founder of Kalaiihumi, a pioneer classical arts institution in Guwahati in 1981where hundreds of students are learning and performing Sattriya and Bharata Natayam for the last 30 years.

6. Smt. Bora has received various awards and honours including prestigious national Sangeet Natak Academy Award in 1996; awarded Senior Fellowship in Dance in 1995 by the Ministry of Culture and Human Resources, Government of India; prestigious Bisnu Rava Award in 2007 by the Chief Minister of Assam for promotion of Sattriya dance internationally; Bestman trophies in Sattriya dance at All Assam Music Conferences (1957-1959) etc.





श्रीमती इन्दिरा पि. पि. बरा

श्रीमती इन्दिरा पि. पि. बरा अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना हैं जो भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी और सत्रीया नृत्य में पारंगत हैं। उन्होंने भारत और विदेशों में व्यापक स्तर पर नृत्य प्रदर्शन किया है।

2. 10 जून, 1947 को जन्मीं, श्रीमती बरा ने चेन्नई के कलाक्षेत्र की महान नृत्यांगना रुक्मिणी देवी अरुंडेल से 13 वर्ष से अधिक समय तक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भरतनाट्यम में विशिष्टता के साथ स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया और चेन्नई में कुचिपुड़ी कला अकादमी में स्वर्गीय गुरु वेम्पट्टी चिन्ना सत्यम से कुचिपुड़ी नृत्य सीखा। वह आईसीसीआर (1992) की पैनल में शामिल सत्रीया नृत्यांगना, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की प्रदर्शन कला विशेषज्ञ समिति (अनुदान के लिए) की सदस्य और दूरदर्शन की एक शीर्ष स्तर की नृत्यांगना हैं। पहली महिला नृत्यांगना के रूप में, उन्होंने मठों के सत्रीया पारंपरिक नृत्य रूप को एक मान्यता प्राप्त भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली के तौर पर पुनर्जीवित और विकसित किया है और पिछले 4 दशक के दौरान, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने 1960 और 1970 के दशक के अंत में अंतरराष्ट्रीय दौरे करके कलाक्षेत्र नृत्य नाटकों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन किया। उनका नाम उन शुरुआती महिलाओं में शामिल हैं जिन्होंने पश्चात्य देशों का परिचय सत्रीया नृत्य से करवाया। वे विदेश मंत्रालय, भारत सरकार की विशेषज्ञ ओडीए समिति की सदस्य हैं।

3. संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2000 में सत्रीया को आधिकारिक तौर पर 'शास्त्रीय नृत्य' के रूप में मान्यता दी थी श्रीमती बरा ने उससे बहुत पहले 1980 और 1990 के दशक में पारंपरिक गुरुओं, प्रख्यात नृत्य विद्वान और आलोचक डॉ सुनील कोठारी और अपनी बेटी डॉ. मेनका पि. पि. बरा के साथ मिलकर भारत के महानगरों के राष्ट्रीय नृत्य केंद्रों और महोत्सवों में आयोजित व्याख्यान–प्रदर्शनों की श्रृंखला के माध्यम से सत्रीया को 'नव–शास्त्रीय' नृत्य के रूप में प्रचारित किया। इस संयुक्त प्रयास से शास्त्रीय नृत्य जगत के कला प्रशासकों, नर्तकों, विद्वानों, समालोचकों और गुरुओं के बीच 'शास्त्रीय नृत्य' के रूप में सत्रीया के बारे में व्यापक जानकारी हुई। इसे राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मीडिया में खासी प्रमुखता मिली और इसने समय के साथ नृत्य प्रेमी आम दर्शकों में सत्रीया नृत्य के प्रति उत्सुकता पैदा करने में मदद की।

4. श्रीमती बरा ने भारतीय शास्त्रीय सत्रीया नृत्य को कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर 'विश्व नृत्य' के रूप में बढ़ावा दिया, जिनमें डांस बेस सेंटर, नेशनल सेंटर फॉर डांस, एडिनबरा, स्कॉटलैंड में एडिनबरा फेस्टिवल फ्रिंज 2011 ; सत्रीया नृत्य सीरीज, यूके 2007, यूनाइटेड किंगडम के 5 प्रमुख शहरों और नृत्य स्थलों की एक विशेष सत्रीया नृत्य यात्रा (2007): बर्मिंघम में अलेक्जेंडर थियेटर और मैक थियेटर, मैनचेस्टर में द लोरी, लंदन में रोहेम्प्टन विश्वविद्यालय, लीसेस्टर में आर्ट्स इन एडुकेशन सेंटर और लिवरपूल में वर्ल्ड म्यूजियम; सियोल, दक्षिण कोरिया (2007) में एशिया पैसिफिक आर्ट्स नेटवर्क टूर; वर्ल्ड ह्यू फेस्टिवल और वियतनाम में हनोई ओपेरा हाउस में आईसीसीआर प्रायोजित सत्रीया डांस टूर (2004); यूएसए में डांस टूर (2000): वाशिंगटन डीसी में वर्ल्ड बैंक ऑडिटोरियम; कैलिफोर्निया में बर्कले आर्ट्स फेस्टिवल, एनवाईसी में बैटरी डांस कंपनी, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स, ह्यूस्टन में भारतीय दूतावास आदि शामिल हैं।

5. श्रीमती बरा ने भारत के प्रमुख राष्ट्रीय नृत्य महात्सवों/आयोजनों जैसे खजुराहो नृत्य महोत्सव, इंडिया हैबिटेट सेंटर, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दिल्ली के सिरी फोर्ट ऑडिटोरियम, मुंबई के नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स, कलाक्षेत्र कला महोत्सव, संगीत अकादमी, कृष्ण गण सभा, चेन्नई की नारद गण सभा, कला मंदिर, कोलकाता का बिरला सभाघर, अहमदाबाद की दर्पण अकादमी में भी सत्रीया नृत्य और भरतनाट्यम प्रस्तुत किया है। वे 1981 में गुवाहाटी स्थित एक अग्रणी शास्त्रीय कला संस्थान, कलाईहुमी की संस्थापक हैं, जहां सैकड़ों छात्र पिछले 30 वर्ष से सत्रीया और भरतनाट्यम सीख रहे हैं और प्रस्तुत कर रहे हैं।

6. श्रीमती बरा को 1996 में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं; जिनमें संस्कृति और मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 1995 में नृत्य में वरिष्ठ फेलोशिप; सत्रीया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए असम के मुख्यमंत्री द्वारा 2007 में प्रतिष्ठित बिष्णु रावा पुरस्कार; अखिल असम संगीत सम्मेलनों (1957–1959) आदि में सत्रीया नृत्य में बेस्टमैन ट्राफियां शामिल हैं ।